कमलेश्वर के उपन्यासों की कथावस्तु : एक अध्ययन

राघवेंद्र सिंह,
शोधार्थी,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास.
विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0)

डॉ0 प्रमोद कुमार सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास.
विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

कमलेश्वर की ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में विख्यापित है। उन्होंने छोटे–बड़े कई उपन्यास लिखे। 'कितने पाकिस्तान' नामक उपन्यास पर उन्हें साहित्य अकादमी का प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। कहानियों की ही तरह उनके उपन्यासों का क्षेत्र भी कस्बा से शुरू होकर महानगरीय जीवन तक फैला हुआ है। कहना न होगा कि इन उपन्यासों में भी उनका प्रामाणिक अनुभव, भोगा गया यथार्थ ही अभिव्यक्त हुआ है। उनके उपन्यासों की मूल चिन्ता सामाजिक सत्य को अंकित करना है। कमलेश्वर के उपन्यासों की कथा–भूमि जीवन के यथार्थ को अपने वास्तविक रूप में चित्रित करती है। उनकी यह कथा–भूमि, स्थितियों और पात्रों के माध्यम से विश्वसनीय लगती हैं। उनमें कृत्रिमता का अभाव है। उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में मानवीय पक्ष को संवेदना के धरातल पर सहजता और कलात्मकता के साथ रूपायित किया है।

Keywords : *कमलेश्वर के उपन्यास,कथावस्तु, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, तीसरा आदमी।*

'कितने पाकिस्तान' को छोड़कर कमलेश्वर के लगभग सभी उपन्यास आकार में छोटे हैं। किन्तु छोटे आकार के इन उपन्यासों का व्यापक फलक है। इनमें संवेदनागत विविधता देखी जा सकती है। उपन्यासों में कस्बाई बोध के साथ–साथ परिवर्तित परिवेश भी उभरकर आया है। वस्तुतः उनकी कथा यात्रा के पड़ावों को उपन्यासों के वस्तुगत विवेचन में देखा जा सकता है। डॉ0 रामदरस मिश्रा ने लिखा है– ''कमलेश्वर कस्बे के जीवन के बहुत संवेदनशील और सचेत द्रष्टा हैं। वे उस जीवन की अनेक छोटी–बड़ी, भली–बुरी सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक स्थितियों को गहराई से पहचानते हैं और उनकी समाजवादी दृष्टि सारे अनुभवों को एक प्रगतिवादी अन्विति प्रदान करती है।''[1] कमलेश्वर के उपन्यासों की विशिष्टताओं का निर्धारण उन पर स्वतन्त्र विवेचन के बाद करना उचित होगा। वस्तुतः उनके उपन्यासों में भी नयी कहानी का बोध मिलता है और कमलेश्वर का बदलता साहित्यिक बोध परिलक्षित होता है। उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

एक सड़क सत्तावन गलियाँ

यह कमलेश्वर का पहला उपन्यास है जो 'बदनाम गली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास सबसे पहले 'हंस' पत्रिका में छपा था और प्रकाशक की भूल से 'बदनाम गली' नाम से आया। डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना ने लिखा है– ''आकार–प्रकार में लघु होने के बावजूद विस्तार में यह काफी बड़ा है और गहराई इसकी इतनी

ज्यादा है कि उसकी थाह पाना मुश्किल है।''[2] इस उपन्यास में मैनपुरी, उ0 प्र0 के एक छोटे से कस्बे के लोगों की इच्छा आकांक्षाओं, दुःख–दर्द, आशा–निराशा को अभिव्यक्त करने की कोशिश हुई है। ''उपन्यास की वस्तु स्वाधीनता के पूर्व के भारत से लेकर सन् 1947 के भारत तक फैली हुई है। आजादी के लिए लड़ने वाले मध्य और निम्नवर्ग के लोगों ने जिस नए समाज की कल्पना की थी, इस स्थिति का मोहभंग स्वतंत्रता के पश्चात् ही हो गया। मास्टर हबीब, संपादक निर्मोही और बाजा मास्टर जैसे असंख्य व्यक्तियों की आकांक्षाओं की अकाल मृत्यु का दस्तावेज यह उपन्यास स्वतंत्रता के पूर्व व स्वतंत्रता के बाद की मानसिकता का सफल अंकन करता है।''[3]

कमलेश्वर ने इस उपन्यास के विषय में लिखा है कि ''यह मेरा पहला उपन्यास है। लिखा सन् 56 में गया था। यह उसी समय पूरा 'हंस' में छपा था।.....मजबूरी में मुझे इस उपन्यास को बेच देना पड़ा। मेरे लिए यह उपन्यास उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय मेरे लिए मेरी माँ और मेरी जन्मभूमि मैनपुरी रही थी। इसे बेचकर करीब बीस साल मेरी आत्मा दुखती रही–लगता रहा, जैसे मैंने अपनी जन्मभूमि या माँ बेच दी हो।''[4] इस उपन्यास पर 'बदनाम बस्ती' नाम से फीचर फिल्म भी बनी। कमलेश्वर के इस उपन्यास में राजनीति भी है और सामाजिक यथार्थ का चित्रण भी। इसमें कम्यूनिस्ट–कांग्रेसी विचारधाराओं के संघर्ष, कस्बे में व्याप्त साम्प्रदायिकता, समाचार पत्रों की वास्तविकता, ड्राइवरों का जीवन और प्रेम में टूटते–बिखरते जीवन को व्यक्त किया गया है।

वस्तुतः नयी कहानी के जिस कस्बाई बोध को लेकर कमलेश्वर की पहचान बनी थी, वह एक सड़क सत्तावन गलियाँ नामक उपन्यास में स्पष्टः परिलक्षित होती है। वीरेन्द्र मोहन ने इस उपन्यास को 'जीवन की रागात्मकता की तलाश' कहा है। वे लिखते हैं– ''कमलेश्वर ने अपने इस उपन्यास में जीवन के उन पक्षों को चुना है, जो बहुत मोहक और आदर्शवादी नहीं है। इस उपन्यास में एक बदनाम बस्ती की ही कथा कही गई है। यह केवल मैनपुरी की कथा नहीं, भारतीय कस्बों की कहानी है।''[5]

डाक बंगला

'डाक बंगला' उपन्यास में कमलेश्वर ने सामाजिक जीवन के यथार्थ को विशिष्ट अंदाज में प्रस्तुत किया है। हालांकि उनके सभी उपन्यासों में निम्न एवं मध्यवर्ग का बिखराव एवं टूटन तथा आर्थिक विसंगतियाँ चित्रित हुई हैं तथापि यह उपन्यास आर्थिक समस्या के दूसरे आयाम की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है। ''कमलेश्वर ने यह उपन्यास एक अजीब–सी रूमानियत के वशीभूत होकर लिखा हैः फलस्वरूप इरा जैसी नारी का जीवन–संघर्ष अपने पूरे प्रभाव के साथ सामने नहीं आ पाता और हम इस उपन्यास के कुछेक अच्छे विवरणों, चित्रणों और काव्यात्मक या सूत्रात्मक वाक्यों में उलझकर रह जाते हैं।''[6] 'डाक बंगला' की इरा पढ़ी–लिखी युवती है किन्तु अपने अस्तित्व को बचाए रखने एवं जीवन–यापन के लिए उसे बहुत सारे समझौते करने पड़ते हैं।

अपनी भाषागत ताजगी और विशिष्टता के बावजूद 'डाक बंगला' उपन्यास किताबी और रूमानी भावुकता से युक्त हो गया है। और यह इस उपन्यास की न्यूनता है।

तीसरा आदमी

कमलेश्वर का यह उपन्यास सहज शैली में लिखा गया है। यह अपने गठन में लम्बी कहानी की तरह है। नयी कहानी में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों के बीच तीसरे आदमी की उपस्थिति को विशिष्ट शैली माना गया था और कथ्य का महत्वपूर्ण अंग। 'तीसरा आदमी' भी पति–पत्नी के बीच का उपस्थित पात्र है। इसे लेखक ने सामाजिक–आर्थिक जीवन से जोड़कर विशिष्ट

बना दिया है। इस तरह यह कहानी मध्यवर्गीय परिवार के दाम्पत्य जीवन के ऊँच–नीच और असहज सम्बन्धों का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती है। ''मध्यवर्गीय परिवारों के संस्कारों, कुंठाओं, आर्थिक असमर्थताओं का बड़ा ही स्वभाविक चित्रण कमलेश्वर के इस उपन्यास 'तीसरा आदमी' में उपलब्ध है।''[7]

'तीसरा आदमी' 'मैं' शैली में लिखा गया है जिसमें प्रथम पुरूष 'मैं' अपनी और अपने पत्नी की कहानी कहता है। इनके बीच 'तीसरे आदमी' की उपस्थिति है। उपन्यास में तीसरे आदमी और पत्नी के बीच अन्तरंग सम्बन्धों का मुक्त चित्रण है। यह चित्रण संकेतों में उभरता है। चूंकि 'मैं' द्रष्टा नहीं है अतः विशेष स्थिति के कारण उसके मन का संदेह और आंतरिक द्वन्द्व, उसके भीतर का घृणा भाव और द्वेष बहुत तीखा होकर उभरता है। इस प्रक्रिया में यह बहुत विश्वसनीय बन जाता है। ''तीसरा आदमी' उपन्यास में समकालीन जीवन के विभिन्न रूपों की पर्याप्त और विविध झांकी मिलती है। मनुष्य कई एक परिचित–अपरिचित रूपों के परिवेश और उसके साथ सम्बन्ध के मानवीय सम्बन्धों और परिस्थितियों के चित्र मिलते हैं। इस उपन्यास में जीवन के कटु सत्यों के सूक्ष्म और मार्मिक रूप अनुभूति की तीव्रता और विविधता के अगण्य स्तरों में बिखरे पड़े हैं।''[8] वस्तुतः यह नयी कहानी के संवेदना एवं शिल्प में लिखी लम्बी कहानी अथवा उपन्यास कही जा सकती है।

समुद्र में खोया हुआ आदमी

कमलेश्वर के इस उपन्यास में भी मध्यवर्गीय जीवन को आधार बनाया गया है। यह लघु उपन्यास वृहत्तर आयामों में मानवीय संघर्ष की कहानी कहता है। इस उपन्यास में परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने स्तर पर और अपने अलग अंदाज में संघर्ष करता है और जीवन के अभावों से लड़ते हुए जिन्दगी को बेहतर बनाने में प्रयत्नशील है। इस प्रक्रिया में उसे सफलता भी मिलती है। उपन्यास में श्यामलाल एवं तारा के माध्यम से नैतिकता के वास्तविक सच को दिखाने की कोशिश हुई है। श्यामलाल मात्र चालीस रूपये में अपनी बेटी को हरबंस को सौंप देता है। यह कृत्य निम्नमध्यवर्गीय परिवार की विवशता को दिखाता है। हालांकि हरबंस तारा को स्वीकार कर लेता है। वह यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेने के बाद समाज के भय से तारा को छोड़कर भाग नहीं जाता अपितु स्वच्छंद प्रेम करता हुआ अपनी पत्नी बना लेता है।

इस उपन्यास में 'समुद्र' को विशिष्ट प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। श्यामलाल का संसार की भीड़ में खुद को एकाकी महसूस करना अथवा उसकी पत्नी का भी खुद इसी तरह की स्थितियाँ महसूस करना उसे और भी अर्थ प्रदान करता हैं। डॉ0 घनश्याम मधुप अपने शोध प्रबंध 'हिन्दी लघु उपन्यास' में उसे एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास बताते हुए लिखते हैं– ''कमलेश्वर के अभी तक के लघु उपन्यासों में सम्भवतः 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' सबसे सफल है। विशेष रूप से यथार्थ की दृष्टि से वैसे जिस मध्यवर्गीय परिवार की कथा इस लघु उपन्यास में कही गई है, वह अकेले ही दिल्ली का नहीं, भारत के किसी भी महानगर पर हो सकता है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' बीरन नहीं स्वयं श्यामलाल है। वह भीषण असमानताओं के समुद्र में खो गया है। उसका परिवार और वह स्वयं भीड़ के सैलाब में कहीं खो गए हैं।''[9]

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की भाषा बहुत कुछ नयी कहानी की भाषा से सम्बद्ध है। इस उपन्यास में सांकेतिकता, रूपकधर्मिता, प्रतीकात्मकता आदि सहज तौर पर भाषा का अंग बन कर आए हैं। अतः भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ी है। उपन्यास में घर को जहाज की संज्ञा से अभिहित किया गया है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' इस जहाज का यात्री है।

लौटे हुए मुसाफिर

कमलेश्वर का यह उपन्यास साम्प्रदायिकता को केन्द्र में रखकर लिखा गया है जिसमें एक ऐसी बस्ती को कथानक के केन्द्र में रखा गया है जिसका इतिहास धर्मनिरपेक्षता की ज्वलंत मिसाल रहा था किन्तु आपसी नफरत और राजनीति के दुष्प्रभाव में साम्प्रदायिकता का शिकार हो गया था। इस उपन्यास का महत्वपूर्ण कथ्य देश–विभाजन से जुड़ा हुआ है। डॉ0 माधुरी शाह ने लिखा है कि इस उपन्यास में ''कमलेश्वर ने विभाजन की घटना के माध्यम से वास्तव में इन्सानी रिश्तों के मानवीय मानदण्डों की खोज की है।''[10] इस उपन्यास में ऐसे अबोध और आम जन को कथा का हिस्सा बनाया गया है जो अपनी रोजी–रोटी और सामान्य जीवन की जरूरतों में उलझे थे किन्तु ऐसे लोग साम्प्रदायिकता की आँधी में उजड़ गए। वे अपने देश से बेहतर की तलाश में पाकिस्तान की ओर उन्मुख हुए थे किन्तु न तो वे पाकिस्तान जा सके और न अपनी बस्ती में लौट सके। उपन्यास के अंत में कुछ लोग लौटते हैं किन्तु वे किसान से मजदूर बन गए थे। यह उनकी त्रासदी है।

कमलेश्वर इस उपन्यास में जिस मुख्य द्वन्द्व को लेकर चले हैं उसमें आर्थिक–दृष्टि प्रमुख है। वे बताते हैं कि साम्प्रदायिकता और देश–विभाजन से समस्याएँ हल होने वाली नहीं हैं बल्कि ''असली लड़ाई तो अमीरी और गरीबी की है।''[11] राजनीति और विभाजन का दुष्प्रभाव बस्ती को पूरी तरह उजाड़ डालता है। ''कमलेश्वर इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि विभाजन के लिए राजनीति उत्तरदायी है। मुस्लिम ध्रुवीकरण वस्तुतः विभाजन के प्रश्न पर ही होता है। बस्ती के अधिकांश लोग अपने 'मुलुक' के लिए ही पलायन करते हैं। उपन्यासकार ने विभाजन के दौरान बस्ती छोड़कर चले गए लोगों को अंत में वापस लौटते दिखाया है हालांकि विभाजन की स्थिति और उसके कारणों को स्पष्ट करने के लिए उसमे मुसाफिरों का लौटना उतना जरूरी नहीं है जितना लेखक का यह कहना–'गरीबी, अपमान, भूख और बेबसी में भी वे हारे नहीं थे पर नफरत की आग और शंकापूर्ण धुआँ वे बर्दाश्त नहीं कर पाए और उनके काफिले एक अनजान देश की ओर चले गए।' 'लौटे हुए मुसाफिर' बेहद सामान्य तरीके से हिन्दू–मुसलमान द्वन्द्व को बहुत तीखे स्तर पर उभारता है और साम्प्रदायिकता के निहितार्थ को बेनकाब करता है।''[12]

काली आँधी

कमलेश्वर का उपन्यास 'काली आँधी' असफल दाम्पत्य की करुण कहानी के साथ–साथ देश में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार और छल–छद्म की भी कहानी है। इस उपन्यास में उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के सामाजिक–राजनीतिक एवं वैयक्तिक जीवन का सूक्ष्म अंकन मिलता है। यह उपन्यास स्वाधीनता के पश्चात् देश में व्याप्त राजनीति के आंतरिक पहलुओं को जिस निर्ममता से उदघाटित करता है वह नायिका मालती के राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण से सहज ही अभिव्यक्त होता है। मालती लगातार प्रगति करती जाती है और इसके लिए उसे तमाम छल–छद्मों का आश्रय लेना पड़ता है। वे अपने मध्यवर्गीय स्तर से ऊपर नहीं आना चाहते तो इसीलिए कि राजनीतिक जीवन में, उच्चवर्ग की खोखली, छद्म एवं आडम्बरपूर्ण जीवन की हकीकत उन्हें मालूम है।

जग्गी बाबू एवं मालती के पारिवारिक जीवन के तनाव सामज के व्यापक सत्य को प्रस्तुत करती है। 'काली आँधी' में मालती को पूँजीवादी व्यवस्था की गलत महात्वाकांक्षा का प्रतीक बनाया गया है। वस्तुत यह उपन्यास पारिवारिक जीवन के तनाव के बहाने सामाजिक–राजनीतिक जीवन का सफल चित्रांकन करती है। कालांतर में प्रसिद्ध निर्देशक गुलजार ने इस उपन्यास पर 'आँधी' फिल्म का निर्देशन किया

जो सफल रही। यह उपन्यास साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में धारावाहिक रूप में छपा था।

आगामी अतीत

'आगामी अतीत' में कमलेश्वर ने सामाजिक जीवन की विसंगतियों को आर्थिक परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित किया है। इस उपन्यास का नायक कमल बोस है जो निम्नवर्ग का एक शिक्षित युवक है। कालान्तर में वह न सिर्फ उच्चवर्ग की ओर आकर्षित होता है और पूँजीवादी शक्तियों से समझौता करता है अपितु अपने वर्ग से विमुख भी हो जाता है। वह एक अवसरवादी व्यक्ति है, जिसकी ओर कमलेश्वर संकेत करते हैं। उनके मत में पूँजीवादी व्यवस्था मानव मात्र को दिग्भ्रमित कर देती है।

कमलेश्वर के इस उपन्यास पर बाजारू और घटिया होने का आरोप लगा था।[13] कमलेश्वर ने इसकी सफाई देते हुए लिखा है– ''मैंने निहायत फूहड़ ढंग से रोमांटिकता को रोमांटिकता से ही तोड़ने की कोशिश इस उपन्यास में की है, और मैं जानता था कि इसे पढ़कर अच्छे–अच्छे गच्चा खा जाएँगे। पूँजीवादी समाज के स्पर्धामूलक परिवेश में पड़कर जब आदमी अपने 'वर्ग' को भूलकर दूसरी तरफ (यानी सफलता की तरफ) लाँघ जाता है और इस स्पर्धा से दब कर (और आदमियत खोकर) जब वह अपनों (या अपने वर्ग) के लिए लौटता है, तब तक उसकी क्या हालत हो चुकी होती है।.....इस उपन्यास की ऊपरी रोमेंटिक खोल के भीतर भी कथ्य है, वह है– इस पूँजीवादी व्यवस्था में स्पर्धा की (पैदा कर दी गई) मजबूरी।''[14]

वही बात

नयी कहानी के आन्दोलनकर्ता कमलेश्वर ने स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर बहुत लिखा है। वस्तुतः नयी कहानी की प्रमुख प्रवृत्ति है– 'स्त्री–पुरुष सम्बन्धों को गहराई से देखना'। 'वही बात' उपन्यास में भी इसी शाश्वत सम्बन्ध को एक नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है। पति की महात्वाकांक्षा से पत्नी को लगातार उपेक्षित होना पड़ता है। उसकी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ दमित होने लगती है। पति का तबादला हो जाने के बाद उसकी ऐकान्तिक भावनाएँ साहसिक कदम उठाती हैं जिससे नई स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। समीरा अपने पति प्रशान्त की उपेक्षा सह नहीं पाती और नकुल के साथ समय व्यतीत करने लगती है।

वस्तुतः कमलेश्वर ने मुम्बई में रहकर व्यवसायिकता को ध्यान में रखकर भी कई उपन्यास लिखे। इनमें अनबीता व्यतीत, सुबह–दोपहर–शाम, एक और चन्द्रकान्ता, अम्मा प्रमुख हैं। 'अनबीता व्यतीत' के लिए कमलेश्वर ने लिखा है कि एक विशेष ''दारूण मृत्यु परम्परा के अंधे अभियान से मुक्ति का एक आख्यान है यह उपन्यास।''[15] इसी तरह अम्मा के लिए उन्होंने स्पष्टतः लिखा है– ''यह सिने–उपन्यास है। इसकी रचना की प्रक्रिया और प्रयोजन उन उपन्यासों से एकदम अलग है जो मैंने अपनी अनुभवजन्य संवेदना के तहत लिखे हैं।''[16]

कितने पाकिस्तान

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जिस पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार दिया गया था। इस उपन्यास के लेखन के दौरान एक साक्षात्कार में कमलेश्वर ने कहा था– ''इसे लिखने में अधिक समय इसलिए लग रहा है क्योंकि यह एक विधिवत् बँधी–बँधाई परिपाटी में लिखी हुई रचना नहीं है। इसमें कहीं न कहीं बहुत बड़े फलक पर चीजों को उठाया गया है। ''मेरे लिए पाकिस्तान एक देश नहीं है। पाकिस्तान एक मानसिक स्थिति है। देश अपनी जगह है'' वह देश जिए–जागे, फले–फूले : इस तरह की जो

स्थितियाँ पैदा होती हैं, जिनसे व्यक्तियों का, समुदायों का लोगों का पीढ़ियों का विस्थापीकरण होता है विस्थापित होती हैं या विभाजित हो जाती हैं, अपनी–अपनी स्थितियों को लेकर और मनुष्य अपने समय में खुद को सामने पड़ा पाता है। यही देखने की कोशिश इस उपन्यास में की गई है।''[17] आशय यह है कि कितने पाकिस्तान व्यापक फलक वाला सांस्कृतिक मुद्दों की गुत्थियाँ सुलझाने की कोशिश करने वाला उपन्यास है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह उपन्यास भारत–पाकिस्तान के विभाजन पर केन्द्रित है किन्तु इसके सूत्र विभाजन के हर बुनियादी पहलू से जुड़ते जाते हैं। वे भारत–पाकिस्तान के विभाजन के झगड़े को धार्मिक उन्माद के तौर पर नहीं देखते बल्कि उसके सरोकारों को उद्घाटित करते हैं। वस्तुतः विभाजन की राजनीति को उनका यह उपन्यास बेपर्द करता है। वे उपन्यास में बताते हैं कि भौगोलिक नक्शों पर भले पाकिस्तान सन् 1947 में उभरा हो– विभाजन की प्रक्रिया उसी समय शुरू हो गई थी जब साम्प्रदायिक शक्तियों ने नफरत के बीज बोने शुरू कर दिए थे। वे कहते हैं कि जब तक धर्म, नस्ल, जाति, सत्ता आदि प्राप्त करने का जुनून लोगों में नशा की तरह छाया रहेगा, कई पाकिस्तान बनते रहेंगे। उनका यह उपन्यास विभाजन के कारकों की पहचान करता है।

कमलेश्वर की औपन्यसिक यात्रा लघु उपन्यासों से शुरू होती है। उनके अधिकांश उपन्यासों पर फिल्मों का निर्माण हुआ और वे सफल रहीं। व्यवसायिकता के दबाव में उनके उपन्यासों का कथ्य और शिल्प दोनों प्रभावित हुआ। कहा जा सकता है कि अनुभव की प्रामाणिकता और भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त करने का जो अभियान लेकर कमलेश्वर चले थे वह कालान्तर में व्यवसायिक होकर यान्त्रिक और फार्मूलाबद्ध होता गया। यही कारण है कि कमलेश्वर ने 'नयी कहानी' आन्दोलन के समाप्त होने की घोषणा भी की और 'समान्तर कहानी' का आन्दोलन शुरू किया।

1- रामदरस मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, पृष्ठ 178

2. डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना, संपा0 कमलेश्वर की औपन्यिासिक यात्रा, (संपा0) मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृष्ठ 184–185,

3. कृष्ण कुरड़िया, कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना, (संपा0) मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृष्ठ 202

4. कमलेश्वर, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, आमुख,

5. वीरेन्द्र मोहन, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, जीवन की रागात्मकता की तलाश, (संपा0) आचार्य सारथी 'रूमी' कितने कमलेश्वर, पृष्ठ 226

6. डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना, कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा (संपा0) मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृष्ठ 187

7. डॉ0 वीरेन्द्र सक्सेना, कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा, (संपा0) मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृष्ठ 188

8. कृष्ण कुरड़िया, कमलेश्वर के उपन्यासों की वस्तु चेतना, (संपा0) मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृष्ठ 211–212

9. कमलेश्वर, उद्धृत–हिन्दी उपन्यास साहित्य की पीठिका और कमलेश्वर के उपन्यास समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 8

10. माधुरी शाह, कमलेश्वर का कथा साहित्य, पृष्ठ 195

[11]. कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर, पृष्ठ 51

[12]. डॉ0 रमाकान्त राय, राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में हिन्दू–मुसलमान सम्बन्ध एवं उनकी रचना दृष्टि, पृष्ठ 89

[13]. कमलेश्वर, देखिए, यह उपन्यास, आगामी अतीत, पृष्ठ 5

[14]. कमलेश्वर, यह उपन्यास, आगामी अतीत, पृष्ठ 5–6

[15]. कमलेश्वर, अनबीता व्यतीत, दो शब्द, पृष्ठ 6

[16]. कमलेश्वर, अम्मा : कुछ शब्द, अम्मा, पृष्ठ 5

[17]. कमलेश्वर साहित्य अमृत, हिन्दी साहित्य में समग्र दृष्टि का अभाव है, नवम्बर, 1999, पृष्ठ 62